सनातन सत्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सनातन सत्य सही दृष्टि सही सोच के अन्तर्गत कुदरत, कुदरत की रचना और कुदरत का कानून की व्याख्या है। सनातन सत्य का अर्थ है–ऐसा सत्य जो सदैव रहता है। मानव जीवन सुख और दुःख के पलड़े में झुलता रहता है। सुख–दुःख से परे वह सोच ही नहीं पाता। सनातन सत्य सारभौम सत्य है। वह कुदरत से जुड़ा हुआ है। इसलिए वह बदलता नहीं। सनातन सत्य कुदरत है। प्रकृति, सृष्टि, जगत्, कुदरत सभी जीव कुदरत में जन्म लेते हैं। अपने कर्मों के अनुसार जन्म लेकर इसी में विलीन हो जाते हैं।

जीव की चार गतियां हैं– नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव। इन चार गतियों से मुक्त होने के बाद वह सिद्ध शिला पर विराजमान होता है। हम जो जीवन जीते हैं वह सापेक्ष जीवन है। रियल ट्रूथ शाश्वत सुख से जुड़ा हुआ है। हमारे सामने दो जगत् है– एक व्यवहार जगत् है और दूसरा निश्चय जगत्। व्यवहार जगत् में जीवन की सम्पूर्ण क्रियाएं घटती हैं। शरीर जड़ और चेतन का मिश्रण है। शरीर पंचभूतात्मक है किन्तु चेतन से युक्त होने के कारण यह मिश्र चेतन कहलाता है। चेतना के कारण ही इसे अर्थात इस शरीर को चेतनवत् कहा जाता है। सनातन सत्य को जानकर हम रियल और रिलेटिव को जान सकते हैं। हम जो सुख और दुःख का जीवन जीते हैं। यह पिछले जन्म के संस्कार के कारण घटित होने वाली घटनाओं का एक क्रम है। हम जो कुछ भी पूर्वजन्म से लेकर आते हैं उसी के अनुसार जीवन जीते हैं। सही प्रकार के सम्बन्ध पूर्वजन्म के कर्म के अधीन है। सुख–दुःख पूर्वकृत कर्मों के कारण है। संसार में अनेक देवी–देवताओं की पूजा होती है, किन्तु कोई देवी देवता सुख प्रदान नहीं करता। सुख–दुःख देने वाला केवल अपना कर्म होता है।

कठपुतली को चलाने वाला अपने ईशारे से कठपुतली को चलाता है। ठीक इसी तरह हमें नचाने वाला पूर्वकृत कर्म है। संसार एक रंगमंच है। रंगमंच के पात्रों की तरह हम भी अनेक

रूप धारण करते रहते हैं और अपना कार्य करके चले जाते हैं। आत्मा सनातन सत्य है। शरीर पड़ है और नश्वर है। चेतना अजर, अमर और अविनाशी है। वह अनन्त सुख का धाम है। अज्ञान में रहता हुआ जीव मैं और मेरे तक सीमित रहता है। वह अपने पद और प्रतिष्ठा में भूला रहता है। यह रिलेटिव सत्य है। रियल तत्त्व चेतना है। यह सनातन सत्य है। सनातन सत्य का उद्देश्य है–मनुष्य अज्ञान से बाहर आये। वह बुराइयों से घिरे नहीं। बुराइयां हमें सत्य का ज्ञान नहीं कराती। सनातन सत्य दृष्टि विज्ञान है। चेतन पर जड़ का कानून लागू नहीं होता। कुदरत पंचभूतात्मक है। यही सृष्टि है, यही जन्मदात्री है, यही संयोग जुटाती है। सनातन सत्य एक दृष्टिकोण देता है। यह जीवन जीने की कला है। अच्छा इनसान बनने के लिए व्यवहार जगत् और रियल जगत् दोनों अच्छे हैं। हमें सत्य को जानने का प्रयास करना चाहिए।

व्यवहार जगत भाव जगत् का परिणाम है। वर्तमान जीवन में हम सुख–दुःख का अनुभव करते हैं। इस जगत् में अनेक प्रकार की बीमारियां, महामारियां आती जाती रहती हैं। इस समय कोरोना जैसी महामारी का प्रकोप पूरे विश्व पर छाया हुआ है। मनुष्य इस बिमारी के सामने बेबस नजर आ रहा है। उसका कोई भी उपक्रम इस बिमारी से लड़ने में समर्थ नहीं हो रहा है। एक छोटे से वायरस ने मानव के अहंकार को नष्ट कर दिया है। मानव अपने को कुदरत पर विजय प्राप्त करने वाला कहता है। इस बिमारी के सामने उसकी कुछ भी नहीं चल रही है। इस बिमारी के कारण विश्व में लाखों से अधिक लोग काल कवलित हो गये हैं। प्रकृति का एक छोटा सा वायरस जब इस प्रकार का प्रकोप दिखला सकता है तो सम्पूर्ण प्रकृति यदि रूष्ट हो जाये तो मानव की क्या गति होगी, यह चिन्तन से परे है।

सनातन सत्य यह बताता है कि किसी को छोटा मत समझो, किसी को दुःख मत दो। सभी जीव कुदरत, कुदरत की रचना, कुदरत के कानून से संचालित है। सनातन सत्य की प्राप्ति से राग–द्वेष नष्ट हो जाता है। राग–द्वेष प्रियता और अप्रियता के कारण आते हैं। सनातन सत्य का मुख्य उद्देश्य ब्लिस की प्राप्ति है। इसके लिए दिव्य नेत्र खोलने की आवश्यता है। यह

समता का नेत्र है। हर संयोग के साथ वियोग जुड़ा हुआ है। जन्म के साथ मृत्यु प्रारम्भ हो जाती है।

इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व ऐसा है जो सनातन सत्य है। वह तत्व है आत्मा। आत्मा के अतिरिक्त जितने भी तत्व है, वे सभी गलन–मिलन धर्मा हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें पुद्गल कहा जाता है। यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक–पृथक हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं। आत्मदर्शन जीवन का सनातन सत्य है। सनातन सत्य सर्वत्र आत्मदर्शन करना है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।।